

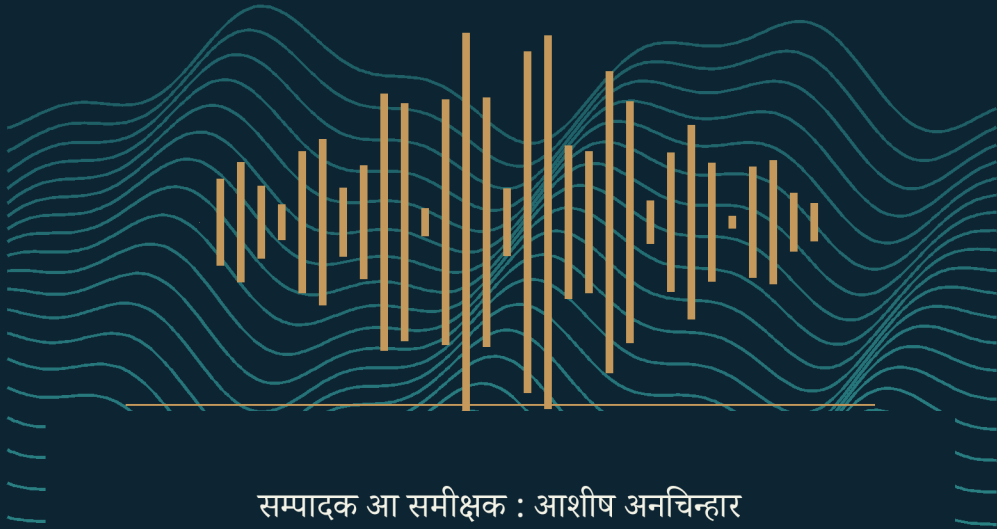
गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५१

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

मिथिलाक नदी आ समाज

बाढ़ि, बान्ह आ जल-इतिहास



सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५१

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

नदी, बाढ़ि, बान्ह, पुनर्वास आ जल-इतिहास

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

“नित नवल दिनेश कुमार मिश्र” नदी-अध्ययन आ साहित्यिक-सामाजिक पर्यावरण-विमर्शक मैथिली सम्पादकीय प्रस्तुति अछि। पुस्तकक मूल सामग्रीमे महानन्दा, कमला, भूतही बलान, कोसी आ बागमतीक इतिहास, तटबन्धक राजनैतिक अर्थ आ विस्थापित समाजक जीवनक पुनर्पाठ अछि।

ई अध्ययन स्रोत ग्रन्थक आलोचनात्मक प्रस्तुति आ दिनेश कुमार मिश्रक प्रत्यक्ष शोधग्रन्थक बीच भेद राखैत अछि। मूल हिंदी आ अंग्रेजी अनुसन्धान-पुस्तकसभक स्वतंत्र सम्पूर्ण प्रतिक सत्यापन एतय नहि भेल अछि। तें संख्यात्मक तथ्य, योजना-परिणाम आ संस्थागत आरोप स्रोत-लेखकक कथनक रूपमे चिन्हल गेल अछि; स्वतन्त्र प्रमाणित परिणामक रूपमे नहि।

अध्ययनक मूल अनुक्रम

- 01 — बन्दिनी महानन्दा : नदीकें कारागार रूपें देखबाक तर्क
- 02 — कमला नदी : तटबन्धक विरोध आ स्थानीय ज्ञान
- 03 — भूतही बलान : तकनीकी झाड़-फूँक आ ग्रामीण विभाजन
- 04 — कोसी : दुइ पाटनक बीच आ नदीक चंचल भूगोल
- 05 — न घाट न घर : पुनर्वास, आश्रय आ सामाजिक पहचान
- 06 — बागमती : नदीक सद्गति कि प्रशासनिक विडम्बना
- 07 — The Myth of Flood Control : विकासक वैधता आ वैकल्पिक नीतिक कसौटी
- 08 — पानी का शाप : बाढ़ि आ सुखाड़क संयुक्त अध्ययन
- 09 — आलोचकक पद्धति : नदी-इतिहास आ सम्पादकीय विश्वसनीयता

01 बन्दिनी महानन्दा : नदीकैँ कारागार रूपैँ देखबाक तर्क

‘बन्दिनी महानन्दा’क विवेचनमे नदीकैँ भौगोलिक प्रवाहक संग सामाजिक जीवन आ प्रशासनिक हस्तक्षेपक वस्तु मानल गेल अछि। ‘बन्दिनी’क रूपक द्रव्य-प्रवाहक स्वच्छन्दता आ मानवनिर्मित बाँधक सीमाक बीच विवाद उत्पन्न करैत अछि। मूल समीक्षामे नदीक उत्तर बिहार आ सीमांचलक भूगोलक संग ऐतिहासिक सम्बन्ध पर बल अछि।

नदीकैँ जीवित पात्र सन पढ़ब साहित्यिक रूपैँ शक्तिशाली अछि, मुदा जलप्रवाह, तटबन्धक संरचना आ जलभरावक कारणक निर्णय रूपकसँ नहि होइत। बाढक मापक, नदीपथक समयक्रम, उच्चताक मानचित्र, गाद-तल आ वर्षाक अलग अभिलेख आवश्यक अछि। एही प्रकार वैज्ञानिक तथ्यक बिनु ‘बान्ह’ सर्वदा विनाशकारी’ सन एकरेखीय निष्कर्ष उचित नहि।

दिनेश कुमार मिश्रक लोकानुभवपर आधारित पद्धति नदीक इतिहासमे उपेक्षित कंठकैँ स्थान दैत अछि। तकर मूल्य तब बढ़ैत अछि जखन ग्राम्य साक्षात्कारक तिथि, स्थान आ कथनकर्ता तथा प्रशासनिक आँकडाक तुलनात्मक तालिका प्रस्तुत होइत अछि।

02 कमला नदी : तटबन्धक विरोध आ स्थानीय ज्ञान

‘बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी’ सम्बन्धी अध्ययन कमलाक प्रवाह, हिमालयी गाद, कृषिक्षेत्र आ बान्हबन्दीक मध्य सम्बन्ध जाँचैत अछि। आलोचक नदी-केन्द्रित विकासक विरुद्ध जनजीवन-केन्द्रित नीति अपनाबयक पक्ष प्रस्तुत करैत छथि। जलप्लावित क्षेत्रक समुदायसभ अपन पारम्परिक पद्धति द्वारा बाढ़िसँ कतेक अनुकूलन कएलनि, ई प्रश्न सुसंगत अछि।

मुदा एखन उपलब्ध संलग्न आलोचनामे किछु पैघ संख्यात्मक दावाक स्वतंत्र मापन-अभिलेख स्पष्ट रूपेँ एकत्र नहि भेटैत अछि। गादक मात्राक ऐतिहासिक परिवर्तन, जलभरावक वार्षिक अन्तर, तटबन्धक रखरखाव आ नदीक प्राकृतिक रूपान्तरण केँ कारणात्मक निष्कर्षसँ पहिने परस्पर जाँचबाक चाही।

एहि अध्ययनक साहित्यिक उपलब्धि नदीकेँ केवल अभियन्ताक तकनीकी वस्तु मानबाक प्रतिवाद अछि; वैज्ञानिक उपलब्धिक स्तरपर प्रति-तर्कक विश्वसनीयता नापब लेल पुनरुत्पादनीय प्रमाणक पञ्जी आवश्यक अछि।

03 भूतही बलान : तकनीकी झाड़-फूँक आ ग्रामीण विभाजन

“भूतही नदी और तकनीकी झाड़-फूँक” पर गजेन्द्र ठाकुरक चर्चा तकनीकी हस्तक्षेपक असमान सामाजिक परिणामक आलोचना करैत अछि। बान्हक भीतर आ बाहर बसनिहार गामक सम्बन्ध केवल भौगोलिक नहि, अधिकार आ लाभ-वितरणक राजनीतिक प्रश्न बनैत अछि। नदीक अस्थिर आकारिकी अपन स्थानिक विशेषता रखैत अछि; एक नदीक उपाय दोसरा नदीपर स्वतः लागू नहि कएल जा सकैत अछि।

“तकनीकी झाड़-फूँक” एक आलोचनात्मक रूपक अछि, सभ अभियान्त्रिक पद्धतिक असफलता सिद्ध करनिहार मापन नहि। विवेचनकें पूछबाक अछि जे योजना डिजाइन, सामाजिक अनुमोदन, गादप्रबन्धन, निकासी आ मरम्मतमे कोन निश्चित असंगति छल। विस्तृत सर्वेक्षणक अभावमे अभियन्ता-समाजक एकरूप दोषारोपण नहि करब चाही।

साहित्यिक दृष्टिसँ एहि आलोचनाक शक्ति भूगोलमे छिपल सामुदायिक विखण्डन कें देखेबामे अछि। लाभकारी आ हानिकारक क्षेत्र अलग देखेला सँ नीति-विकल्पक समतामूलक पद्धति विकसित भऽ सकैत अछि।

04 कोसी : दुइ पाटनक बीच आ नदीक चंचल भूगोल

‘दुइ पाटन के बीच मे—कोसी नदी की कहानी’क परिचर्चामे कोसीक बहुधारात्मक इतिहास, अभियान्त्रिक नियन्त्रण आ बान्हक भीतरक जीवनकेँ प्रमुख स्थान देल गेल अछि। नदीक चंचल प्रवाहपथ आ मौसमी जलविस्तारक साहित्यिक रूपान्तरण विस्थापित लोकक निरन्तर अनिश्चितता देखबैत अछि। आलोचक एहि अनिश्चितताकेँ स्मृति, जीविका आ सांस्कृतिक सम्बन्धक प्रश्न बनबैत छथि।

‘३८० गाम’, ‘आठ लाख लोक’ सन संख्यात्मक उल्लेख मूल पुस्तकक आलोचनात्मक प्रस्तुतिमे अछि; एहि अध्ययनमे स्वतंत्र जनगणना, उपग्रह नक्शा आ पुनर्वास सूची सँ मिलान नहि भेल अछि। तथ्यक एहन सीमा स्पष्ट करब नकारात्मक निर्णय नहि, शोधक प्रामाणिक शर्त अछि।

कोसी विषयक मूलक आलोचना जे बुनियादी प्रश्न उठबैत अछि, से अछि: बाढ़िक नियन्त्रणक सार्वजनिक लाभ के पबैत अछि, ओकर दीर्घकालिक लागत के वहन करैत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर बहुस्थानिक आंकड़ा आ प्रभावित लोकनिक स्वयं कथन संग पढ़नाइ चाही।

05 न घाट न घर : पुनर्वास, आश्रय आ सामाजिक पहचान

“न घाट न घर / Refugees of the Kosi Embankments” विस्थापित

व्यक्तिक आश्रय-विहीन जीवनपर केन्द्रित अछि। घाट आ घर दुनूक निषेध भौतिक आवास मात्र नहि, सामाजिक सम्बद्धता, मृत्यु-संस्कार, आवागमन आ घरेलू श्रमक संकट संकेतित करैत अछि। आलोचनाक एहि स्तरपर नदी-योजना राज्य-समाज संबंधक प्रमाण बनैत अछि।

पुनर्वासक मूल्यांकन केवल आवंटित भूखण्डक संख्यासँ नहि होयत। विद्यालय, स्वास्थ्य, खेतिहर रोजगार, बाढिक कालमे पहुँच, महिलाओंक सुरक्षा आ कागजी स्वामित्वक स्थिति सेहो जाँचब आवश्यक अछि। मूल समीक्षाक लोकसाक्ष्यक आग्रह एहि व्यापक सूचकसभक नीतिगत दिशा दैत अछि।

एहि विषयमे तीक्ष्ण साहित्यिक भाषा त्रासदीक वास्तविकता बुझबैत अछि, मुदा व्यक्तिक बयान प्रकाशित करैत सहमति, तिथि आ स्थानक नैतिक विवरण सेहो प्रमाणपद्धतिक भाग होयत।

06 बागमती : नदीक सद्गति कि प्रशासनिक विडम्बना

“बागमती की सद्गति”क आलोचनात्मक परिचर्चा बान्हबन्दी, जलनिकासी, कृषि आ लोकजीवनक परस्पर परिवर्तनकेँ विषय बनबैत अछि। ‘सद्गति’ शीर्षकमे प्रश्नसूचक व्यंग्य अछि: सार्वजनिक योजनाक नाममे विकासक घोषणा होइछ, मुदा नदीसँ सम्बद्ध समाज पर परिणाम असमान रहि सकैत अछि।

आलोचक जलभरावक संग आर्द्रभूमि, चौर, पोखरि आ खेतक सम्बन्ध देखबैत छथि। एहि सामाजिक-पर्यावरणीय दृष्टिक महत्त्व अछि; तथापि जल-विज्ञानक निष्कर्ष लेल भूमिगत जल, मौसमी वर्षा, कटाव आ नदी-निकासक पूर्व-पश्च आँकड़ा आवश्यक अछि।

बागमतीक मामलामे अन्य नदीक अनुभवकेँ प्रमाणरहित सामान्य नियम बनाबयब नहि उचित। नदी-विशेषक संरचना, राज्य-सीमा आ स्थानीक तकनीकी निर्णय अलग अभिलेख मागैत अछि।

07 The Myth of Flood Control : विकासक वैधता आ

वैकल्पिक नीतिक कसौटी

अंग्रेजी शीर्षक “The Myth of Flood Control” बाढ़ि-नियन्त्रणक सार्वजनिक आश्वासनपर प्रश्न करैत अछि। दिनेश कुमार मिश्रक आकलनक आलोचनात्मक प्रस्तुति तटबन्धे आधारित एकमात्र उपायकेँ सार्वभौम समाधान नहि मानबाक आग्रह करैत अछि। स्थानीय वर्षाजल, सिल्ट आ पुनरावर्ती बाढ़िक परम्परा अनुसार क्षेत्रवार उपायको आवश्यकता अछि।

मुदा ‘मिथक’ कहबासँ सिद्ध नहि होइत जे सभ नियन्त्रण उपाय अप्रभावी छथि। लागत-लाभ विश्लेषण, आपदा-पूर्व चेतावनी, मृत्युदर, प्रतिरक्षा, कृषि-उत्पादन आ बाधित जलनिकासी अलग समयक्रममे तुलना आवश्यक अछि। पूर्वानुमान आ आपदा-तैयारीक विकल्प यथार्थ रूपेँ प्रस्तुत भेला पर आलोचना नीति-निर्माणमे प्रभावी होयत।

एहि अध्ययनमे मानवीय अनुभूतिक गवाहीकेँ प्राविधिक अध्ययनक प्रतिद्वन्द्वी नहि, सहायक साक्ष्य मानल गेल अछि। सचेत शोध दुनू ज्ञान-पद्धतिक मेलसँ विकसित होइत अछि।

08 पानी का शाप : बाढ़ि आ सुखाइक संयुक्त अध्ययन

२०२६क “पानी का शाप: बिहार में बाढ़ि-सुखाइ”क उल्लेख मूल संकलनक

पुस्तक-पञ्जीमे अछि। बाढ़ि आ सुखाइक संयुक्त उपस्थिति क्षेत्रक जल-

असन्तुलनक एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठबैत अछि। वर्षाक बहुलता आ पेयजल

अथवा सिंचनक अभाव एकहि भूभागमे विभिन्न ऋतुमे सम्भव अछि; तँ वार्षिक जलपरिमाणक सरल योग पर्याप्त नहि।

एहि विषयक समीक्षा वर्षाक समय-वितरण, जलनिकासी, भूजल पुनर्भरण, भूमि-

उपयोग आ कृषक निर्णयक अलग अभिलेख मांगैत अछि। “शाप” साहित्यिक

रूपक अछि, प्रकृतिक अनिवार्य नियति नहि; समाज द्वारा निर्मित जोखिम आ

पर्यावरणीय असमानता केँ देखेनाइ समीक्षाक बौद्धिक जिम्मेदारी अछि।

नवीन पुस्तकक वास्तविक सभी अध्याय वा अभिलेखक स्वतंत्र प्रतिलिपि एहि संलग्न मूलमे उपलब्ध नहि, तँ एकर सम्पूर्ण तर्कक निश्चित मूल्याङ्कनक दावा नहि कएल गेल अछि।

09 आलोचकक पद्धति : नदी-इतिहास आ सम्पादकीय विश्वसनीयता

‘नित नवल दिनेश कुमार मिश्र’क आरम्भमे १९४६ आ आन परिचय-अंशमे १९४८ सन जन्म-वर्षक असमान उल्लेख भेटैत अछि। एहन तथ्यक अन्तिम निर्णय मूल जन्म-अभिलेख वा अधिकृत जीवन-विवरणसँ करबाक चाही; सम्पादकीय संस्करणमे कमसँ कम भिन्न स्रोतक हवाला सहित जाँच-टिप्पणी आवश्यक अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक प्रस्तुतिमे अभियान्त्रिक अध्ययन, लोकइतिहास, स्मृतिग्रन्थ आ पर्यावरणीय नैतिकता एकसंग उपस्थित अछि। एहन बहुविषयक पद्धतिक शक्ति ओकर समावेशिता अछि; कमजोरी तखन उत्पन्न होइत अछि जखन लोकक अनुभवक व्यथा आ प्राविधिक परिमाणक भिन्न साक्ष्य-नियम धुँधला भऽ जाइत अछि।

स्रोतवार तिथि, दावा, स्थान, प्रत्यक्ष उद्धरण, अभिलेख-संख्या आ वैकल्पिक व्याख्याक पञ्जी ऐ पुस्तककें पुनरुत्पादनीय शोधक रूपमे मजबूत करैत। एहि अध्ययनक लक्ष्य पर्यावरणीय न्यायसँ संबंधित प्रश्नकें अवमूल्यित नहि, स्पष्ट प्रमाण-निर्भर बनायब अछि।

समग्र मूल्याङ्कन

ई सम्पादकीय पोथी नदीकें मात्र भौतिक जलधारा नहि, सामाजिक स्मृतिक सक्रिय केन्द्रक रूपमे देखबैत अछि। मिथिलाक जलजीवनक साहित्यिक इतिहास लिहनिहार आलोचक लेल ई आधार महत्त्वपूर्ण अछि। अभियान्त्रिकी आ जनस्मृतिक परस्पर आदान-प्रदानक आग्रह पुस्तकक सशक्त पक्ष अछि।

तथ्यगत दृढ़ता लेल नदीवार परियोजना-काल, गादक मापन, भू-उपयोग, जनगणना, विस्थापन सूची आ पुनर्वासक परिणामक स्रोत तालिका जरूरी अछि। लोकक अनुभवकें नीतिगत निर्णयमे स्थान देब आ हर बान्हकें दोषी मानि देब दू भिन्न बात अछि। वैकल्पिक नीतिक प्रभावी आलोचना अनेकों मापक आ बहु-वर्षीय मूल्याङ्कन माँगैत अछि।

वर्तमान अध्ययनक निचोड़ समानान्तर इतिहास-पद्धतिक ई आग्रह अछि जे उपेक्षित लोकक अनुभव इतिहासक स्रोत छथि; मुदा स्रोतक सम्मान ओकर सत्यापनक आवश्यकता समाप्त नहि करैत।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। नित नवल दिनेश कुमार मिश्र: पोथी प्रवेश। संलग्न मूल
Microsoft Word संस्करण; प्रकाशन-विवरण आ सम्पूर्ण समीक्षात्मक पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५१

महानन्दा, कमला, भूतही बलान,
कोसी आ बागमतीक नदी-इतिहास;
तटबन्ध, विस्थापन आ पुनर्वासक
सामाजिक आ अभियान्त्रिक साक्ष्यक
आलोचनात्मक पुनर्परीक्षण।

विदेहक मूल साहित्यिक अभिलेख



www.videha.co.in



[GitHub Videha Archive](#)

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

छओ बाइ नौ इञ्च — विदेह